Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)

VOL- IX | ISSUE- V | MAY | 2022 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.331 | ISSN 2349-638x

सर्वेष्वर के नाटकों में व्यष्टि-समष्टि चेतना

डॉ. सोनू बेनीवाल
व्याख्याता (हिन्दी)
सेठ जी.एल. बिहाणी सनातन धर्म स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
श्रीगंगानगर

सारांष

नाटक अन्य काव्य विधाओं की अपेक्षा अधिक सामाजिक विधा है। सर्वेश्वर के नाटक उनकी समाजपरक दृष्टि से आप्यायित है, किन्तु रचनाकार की व्यष्टि चेतना भी उनमें प्रतिफलित हुई है। सर्वेश्वर ने व्यक्ति के सम्मुख जीवन जीने के नये आयाम प्रस्तुत किये है। समाज में व्यक्ति अपने मूल्य किस प्रकार खो रहा है इसका दिग्दर्शन सर्वेश्वर के नाटकों में हुआ है। उन्होंने व्यक्ति की उस हर चेतना का चित्रण किया है, जिसको आदमी आज के वातावरण में लिये दिये उपेक्षित है। उन्होंने हमारे समाज के व्यक्ति को अपने हक के लिए सर उठाने का संदेश दिया है। सर्वेश्वर ने अपने नाटकों के माध्यम से बताया है कि, आज समाज में व्यक्ति अपने पुराने मूल्यों को खो रहा है। सर्वेश्वर ने अपने नाटकों के माध्यम से समाज की उस चेतना का वर्णन किया है जो समाज के आम आदमी को उद्वेलित कर रही है। आज जिन परिस्थितियों में आम आदमी कष्ट झेल रहा है सर्वेश्वर ने उनका चित्रण किया है।

मुख्य शब्द- *नाटक, सामाजिक चेतना, वैयक्तिक दृष्टिकोण, व्यष्टि-समष्टि चेतना*

सर्वेश्वर के नाटकों में व्यष्टि चेतना

नाटक अन्य काव्य विधाओं की अपेक्षा अधिक सामाजिक विधा है। उसका आस्वादन सामाजिकगण समूह में कर सकते हैं। इससे नाटक में रचनाकार की सामाजिक चेतना को स्फुरित होने का अधिक अवसर मिलता है। सर्वेश्वर के नाटक उनकी समाजपरक दृष्टि से आप्यायित है, किन्तु रचनाकार की व्यष्टि चेतना भी उनमें प्रतिफलित हुई है।

सर्वेश्वर ने व्यक्ति के सम्मुख जीवन जीने के नये आयाम प्रस्तुत किये है। समाज में व्यक्ति अपने मूल्य किस प्रकार खो रहा है इसका दिग्दर्शन सर्वेश्वर के नाटकों में हुआ है। उन्होंने व्यक्ति की उस हर चेतना का चित्रण किया है, जिसको आदमी आज के वातावरण में लिये दिये उपेक्षित है। उन्होंने हमारे समाज के व्यक्ति को अपने हक के लिए सर उठाने का संदेश दिया है।

भय, आंतक एवं असुरक्षा से त्रस्त व्यक्ति

सर्वेश्वर ने 'बकरी' नाटक में भय, आतंक एवं असुरक्षा से ग्रस्त व्यक्ति का चित्रण किया है। इस नाटक में 'बकरी' के माध्यम से पाखण्डी लोग, गरीबों और आम आदमी को लूटना चाहते हैं। एक पढ़ा-लिखा युवक गाँव वालों को समझाना चाहता है किन्तु गाँव के लोग भय के कारण उसका साथ नहीं देते। वे कहते हैं – "बेटा तुम्हारा कर्म तुम्हारे साथ आसरम में पुलिस है, पलटन है ऊ बड़े लोगन की चीज है, हम छोटवार ज्यादा सिर उठय के हमें चलना ठीक नहीं।"

नाटककार ने चित्रित किया है कि गरीब आदमी भय के कारण आगे बढ़ना ही नहीं चाहता, क्योंकि अगर उसने जरा सी भी आवाज उठाई, तो पूँजीपति लोगों द्वारा खरीदी गई पुलिस कहेगी "जो बदमाशी करेगा उसको परलोक भी भेजा जा सकता है उसकी कृपा से हम आदमी को ठीक करना जानते है।"

सर्वेश्वर ने अपने नाटकों के माध्यम से आम आदमी को जागरूक होने का सन्देश दिया है। सर्वेश्वर अपने 'अब गरीबी हटाओ' नाटक में समाज के व्यक्ति को कह रहे हैं कि ये बड़े नेता लोग आप गरीबों को अन्दर ही अन्दर खत्म कर रहे है लेकिन अकेला व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता, सब एक हो जाओं क्योंकि ये भेड़िये दरिंदे जल्दी से नहीं मरते हैं। नाटककार आज के व्यक्ति को कह रहा है, "उसे तू अकेले नहीं मार पायेगा। उसकी बोटी-बोटी काट डाल फिर भी वह जिन्दा रहेगा।

सर्वेश्वर कहते है कि एक को मारने से कुछ नहीं होगा इनकी पूरी मण्डली को खत्म करना होगा-

"एक साँप को मारने से क्या होगा? उसका खानदान तो रहेगा।"

इसी तरह लेखक कहता है इनको जड़ों से मिटाना होगा तभी गरीबों का भय दूर होगा। जनता इन लोगों से बहुत डरी-डरी सी रहती है।

अकेलापन

सर्वेश्वर ने अपने नाटक 'चाँदी का वर्क' में व्यक्ति की उस भावना का चित्रण किया है जो अपनों के होते हुए भी अकेलापन महसूस करता है और सोचता रहता है कि मेरे अपनों ने ऐसा क्यों किया। इस नाटक में नायक दूसरों को अपने अकेलेपन का आभास तक नहीं होने देना चाहता, और अपने मित्र से कहता है, "इस अकेलेपन में भी बेहद शान्ति है कहीं कोई शासन नहीं। पूर्णमुक्ति। पूर्ण स्वच्छन्द। कहीं कोई क्रम नहीं। अपना अनुशासन अपने को ही स्वीकार नहीं। किसी भी दिन के बीत जाने का खेद नहीं। जहाँ सब अपने है, कोई भी अपना नहीं। जहाँ सब प्रिय है। कोई भी प्रिय नहीं 'हाँ' और 'नहीं' के बीच की स्थिति। खामोश शान्तिमय एक सी स्थिति। इतना गहरा सूनापन जहाँ मन स्वयं को भूल जाता है।"

इस नाटक का नायक 'दीनू' अपने परिवार के होते हुए भी बिल्कुल अकेला है। वह बीमार होने के कारण बिल्कुल शून्य स्थिति में है। वह दूसरों को दिखाने के लिए कहता है -मुझे कोई दुःख, कोई अकेलापन नहीं है। फिर भी उसकी बातों से यह आभास होता है कि उसको अकेलेपन के कारण किसी भी चीज से लगाव नहीं रहा इसलिए दीनू, बृजकिशोर से कहता है, "मृत्यु के नजदीक पहुँचकर साफ दिखाई देने लगता है कि अपना शरीर तक अपना साथ छोड़ रहा है।"

सर्वेश्वर ने इस नाटक के माध्यम से यह बताया है कि जीवित रहते हुए भी कोई साथ नहीं देता है तो मृत्यु के क्षणों में तो अपना शरीर भी साथ छोड़ देता है। इस नाटक में समाज के व्यक्ति के जीवन की विडम्बना को दर्शाया गया है कि जवानी में सब अपना काम साधने में लगे रहते हैं किसी को किसी की परवाह नहीं होती। इसलिए जब तक व्यक्ति की उम्र कमाने लायक होती है तब दूसरों की मदद भी करनी चाहिए।

जीवन के प्रति वैयक्तिक दृष्टिकोण

सर्वेश्वर ने अपने नाटकों में व्यक्ति के उस दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया है, जो आज के व्यक्ति को जीने के लिए प्रेरित करता है। नाटककार के अनुसार अगर व्यक्ति ने सच्चाई का मार्ग नहीं अपनाया तो वह झूठ की दलदल में बुरी तरह फसं जाएगा। सर्वेश्वर के 'लड़ाई' नाटक में सत्य का मार्ग अपनाया गया है। लेखक इस नाटक के माध्यम से आज के व्यक्ति को यही कहना चाहते है कि, व्यक्ति की सोच यही होनी चाहिए कि हमेशा वह कहता रहे, "अब मैं सत्य के लिए लड़ूँगा। न खुद कोई गलत काम करूँगा, न दूसरों को करने दूगाँ।"

'लड़ाई' नाटक में व्यक्ति को अपने पर विश्वास ही नहीं रहा। उसको नहीं लगता कि सत्य कभी जीत सकता है। वह कहता हैं कि महात्मा गाँधी ही कहकर गये थे उसके बाद तो इस समाज में झूठ का ही बोलबाला है। आज के व्यक्ति की भी यही सोच है। वह कहता है "यहाँ बिका कौन नहीं है? आप भी बिके हैं, हम भी बिके हैं, सारा देश बिका है। बिकना ही यहाँ टिकना है।" लेखक ने इस नाटक के द्वारा

सत्य को प्रस्तुत किया है। वह कहता है कि, आज जो अपने आप को बेच देता हैं वही इन्सान इस समाज में सुखपूर्वक जी सकता है शासन कर सकता है। जिस दिन हमने सत्य बोल दिया उस दिन से हमारा जीवन खत्म है यही दृष्टिकोण सर्वेश्वर के दूसरे नाटक 'अब गरीबी हटाओ' में भी व्यक्त किया गया है। इसमें गरीबों पर अत्याचार हो रहा है इसलिए इस नाटक में एक व्यक्ति दूसरे से कहता है कि "बहुत बड़ा खानदान है उसका, जैसे बरगद! एक जड़ काटने से कुछ फरक नहीं पड़ता असली जड़ काटनी होगी, फिर यह देखना होगा कि जमीन पर उसकी कटी हुई शाखा न लगने पाए। नहीं तो फिर उसका खानदान पैदा हो जाएगा।"

इस नाटक में व्यक्ति को लगता है कि इस झूठी सरकार और झूठे लोगों को जड़ों से खत्म करना होगा और जो इन्होने गलत रास्ते दिखलाए हैं उनको रोकना होगा। वरना इन बेईमान लोगो का खानदान तो बढता ही जाएगा। इसलिए सर्वेश्वर ने आज के व्यक्ति को सचेत किया है कि, "एक आदमी का खून पीने से प्यास नहीं बुझती, पूरे खानदान का खून पीना होगा। वह अकेले तू नहीं पी पाएगा यह आसान काम नहीं है।"

लेखक व्यक्ति को कहना चाहता है कि एक आदमी से कुछ कहने मात्र से कुछ फर्क नहीं पड़ेगा। झूठ की पूरी टोली को हिलाकर रख दो, तभी तुम्हारी इच्छा पूरी होगी। 'अब गरीबी हटाओ' नाटक में समाज का आम आदमी इन नेताओं से कहता है कि, "मजाक तो आप लोगों ने खुद अपना बना रखा है। पहले राजतंत्र में बना रखा था, अब लोकतंत्र में बना रखा है। शोषक के चेहरे वही हैं, बिल्ले बदल गये है। गरीबी हटाओं ठगी का नारा हो गया है। जितना यह नारा ऊपर उठता है, गरीब आदमी उतना ही नीचे गिरता है।"

इस नाटक के माध्यम से समाज के व्यक्ति की सोच, उसके निर्णय, दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया गया है। लेखक के अनुसार आज के व्यक्ति को यह सब पता है कि कौन बेईमान है कौन ईमानदार। लेखक कहता है कि अब व्यक्ति के जागने की देर है जिस दिन वह खड़ा हो गया तब इन ठगियों को देश छोड़कर भागना पड़ेगा। आज व्यक्ति झूठ को ज्यादा बर्दास्त नहीं कर सकता। लेखक ने आज के व्यक्ति को सन्देश दिया है कि किसी के दबाव में आकर अपने देश या समाज को बदनाम मत करो, यह देश और समाज अपना ही है किसी और का नहीं।

प्रेम चेतना

सर्वेश्वर ने अपने नाटकों के माध्यम से प्रेम के सच्चे रूप का वर्णन किया है उनके नाटक "रूपमती बाजबहादुर" में प्रेम का चित्रण हुआ है। इस नाटक में बाजबहादुर रूपमती से प्यार करता है। बाजबहादुर प्रेम में मुग्ध होकर गाने लगता है कि रूप के बिना हार शोभा नहीं देता जैसे सिर के बिना ताज। इसी तरह दोनों गाते-गाते एक दूसरे में खो जाते हैं तभी उसके पिता आ जाते हैं और वे क्रोधित हो जाते है। रूपमती प्रेम में डूबकर फिर गाने लगती है, "रूपमती के चेहरे पर एक भय की जगह एक मोहक शक्ति है जैसे उसे उसका सर्वस्व मिल गया हो।" सर्वेश्वर ने यही बात बताने की कोशिश की है कि प्रेम एक ऐसा नशा है जिसके आगे सब नशे बेकार हैं। रूपमती ने प्रेम में वह सब कुछ पा लिया जिसकी उसको चाह थी और वह गाने लगती है-

"पिय की छाया संग रहूँगी। रोम-रोम ते बोलत डोलू बैनन नाहि कंहूगी। जाहि शब्द ते अधर जुरत हैं ताही शरण गहूंगी। 'रूपमती' तप-प्रेम सिंधु में डूबूगीं, न बहूंगी।" इस नाटक में रूपमती अपने प्रेमी के लिए अपना तन-मन न्यौछावर करने को तैयार है। और दोनों एक दूसरे की आँखो में देखकर एक दूसरे को अंग लगा लेते हैं। तभी युद्ध की घोषणा होती है बाजबहादुर युद्ध में जाते हैं और उनकी मृत्यु हो जाती है। उसके पश्चात् आदमखाँ रूपमती को अपना बनाना चाहता हैं लेकिन रूपमती इन्कार कर देती है। इसके बाद रूपमती अपनी जान दे देती है। प्रेम में बलिदान

हो जाती है। सर्वेश्वर ने प्रेम-चेतना का बहुत अच्छा वर्णन किया है। प्रेम वही होता है जिसमें जान दी जाती है ली नहीं जाती। प्रेम खुदा की वह ताकत है जिसको पाकर व्यक्ति सब कुछ भूल जाता है प्रेम के बिना यह दुनिया नीरस होती। प्रेम के प्रति यह दृष्टिकोण व्यष्टि चेतना का अंग है।

सर्वेष्वर के नाटकों में समष्टि-चेतना

सर्वेश्वर ने अपने नाटकों के माध्यम से समाज की उस चेतना का वर्णन किया है जो समाज के आम आदमी को उद्वेलित कर रही है। आज जिन परिस्थितियों में आम आदमी कष्ट झेल रहा है सर्वेश्वर ने उनका चित्रण किया है। उन्होंने अपने नाटकों द्वारा भ्रष्ट राजनीति का चित्रण किया है। आज की राजनीति गरीबों का शोषण कर रही है। उन्होंने बच्चों के विकास में भी योगदान दिया है। सर्वेश्वर को अपने देश और उसमें रहने वाली गरीब जनता से हमेशा ही प्यार था। देश-प्रेम की भावना भी उनमें कूट-कूट कर भरी हुई थी। भारतीय संस्कृति को ऊँचाइयों तक पहुँचाने में और आज के व्यक्ति को आगे बढाने में उनका बहुत बड़ा योगदान है।

महत्वाकांक्षी एवं स्वार्थी राजनैतिक व्यवस्था

सर्वेश्वर के नाटकों में भ्रष्ट राजनीति और स्वार्थी नेताओं का चित्रण किया गया है। जो दिन दहाड़े गरीबों का शोषण करते हैं। सर्वेश्वर का 'बकरी' नाटक में एक पढा लिखा युवक गाँव की जनता को समझाना चाहता है। और कह रहा है कि, "बाबा, हम समझ नहीं पा रहे हैं, ई सब ठग है, आप सबको सीधे आदमी जान ठगी करते हैं, देश में ई ठगी बहुत चल रही है। सूखा महामारी, अन्न जल की तबाही सब इन्हीं लोगो की वजह से है।" इस नाटक में नेता और पूँजीपति लोग जनता को लूटना चाहते हैं। गाँव की भोली-भाली जनता उनके बहकावे में आ जाती है क्योंकि वे लोग इन गरीबों को अन्दर ही अन्दर डराते हैं कि आपके खेत नष्ट कर देंगे, भूख के डर से यह जनता इनका साथ देती है। सर्वेश्वर ने 'बकरी' नाटक में कहा है कि, "यही वोट, सब मजाक हो गया है"। सब झूठ पर चल रहा है गरीबों की बकरी पकड़ कर पहले पैसा दूहा। अब वोट दूह रहे हैं फिर पद और कुर्सी दूहेंगे।" इस नाटक के माध्यम से सर्वेश्वर ने इन नेता लोगों की पोल खोलकर रख दी है। ये नेता भोली-भाली जनता से झूठे वायदे कर उनको अपने जाल में फाँस लेते हैं। और चुनाव जीत जाने पर उनकी तरफ देखना तक भी पसन्द नहीं करते। लेखक कहता है कि हमारे समाज में हर क्षेत्र में गरीबों से भेदभाव किया जाता है। उनको सबसे पीछे वाली लाईन में खड़ा किया जाता है और पैसे वाला आगे खड़ा होता है। सर्वेश्वर अपने 'लड़ाई' नाटक में भी यही कहते हैं, "चन्द पैसे वाले बच्चों को आप ऊपर उठाना चाहते हैं। उन्हीं को बढाना चाहते हैं कम आमदनी वाले गरीब घरों के बच्चों कों, जिनके माता-पिता न मंत्री हैं न पैसे वाले हैं, न बड़े-बड़े ओहदे पर हैं उन्हें आप नीचे दबाना चाहते हैं।" इस नाटक में सर्वेश्वर ने सामाजिक सस्थाओं में जो हो रहा है उसका बेबाक चित्रण किया है।

आज समाज में जो ऊपर से दिखावा करता है उसी को दुनिया मानती है। गरीबों का अन्दर ही अन्दर खून चूसने वाला ऊपर से बहुत मीठी-मीठी बातें करता है और वही साहुकार भी कहलाता है। हालांकि होता वही बेईमान है सब गलत कार्यो के पीछे उसी का हाथ होता है।

सर्वेश्वर ने स्वार्थी नेताओं की पोल खोलकर रख दी है। उन्हानें उनकी जड़ों को उखाड़ने की कोशिश की है। उन्होंने समाज के लोगों को समझाने की कोशिश की है कि जैसे ये नेता और पूँजीपति लोग करते हैं वैसे ही तुम करो। तभी जीना सिखोगे।

शोषण का चित्रण

सर्वेश्वर ने अपने नाटकों के माध्यम से गरीबों पर हो रहे अत्याचार और शोषण का चित्रण किया है। देश के नेता, पूँजीपति और जमींदार लोग गरीबों का हर तरह से शोषण करते हैं, क्योंकि गरीबों के पास

साधन नहीं होते वे उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकते। सर्वेश्वर के 'बकरी' नाटक में भ्रष्टाचारी लोग एक गरीब औरत की बकरी को लेकर उसे गाँधी जी की बकरी बताते हैं। इसलिए वह कहती है, "पर हूजुर ई बकरी हमार है। हम गरीब आदमी हैं, आप किसी और बकरी को गाँधी जी की बकरी बनाय लें। हमार बच्चे एही के दूध से रूखी रोटी खात हैं। एही के सहारे हम जीय रहे हैं।" इस नाटक में गरीब लोगो के साथ अन्याय होता है। उनकी बातों पर जानबूझकर कोई विश्वास नहीं करता। क्योंकि पूँजीपतियों से उन्हें धन मिल चुका है। गरीबों के पास कुछ नहीं होता तभी तो उनको सजा मिलती है। सर्वेश्वर ने इस नाटक के द्वारा समाज के यथार्थ का चित्रण किया गया है। इस नाटक में उन्होंने मिनिस्टर से कहा, "आपको यह बेड एक गरीब आदमी की जान लेकर दिया जा रहा है। मैं लोगों को इकट्ठा करूँगा। अस्पताल की ईंट से ईंट बजाकर रख दूँगा।"

इस नाटक में सर्वेश्वर ने सच का साथ दिया है और यही बतलाने की कोशिश की है कि, भ्रष्टाचार की जड़ें इतनी फैल चुकी है कि एक व्यक्ति के बोलने से कुछ नहीं होगा। सभी को मिलकर कदम बढाना होगा।

भारतीय संस्कृति और परम्परा का चित्रण

सर्वेश्वर ने अपने नाटकों के माध्यम से भारतीय संस्कृति, परम्परा को आगे बढ़ाया है। उनको लगा था कि, हमारे समाज में आने वाली पीढ़ी इन त्यौहारों और परम्पराओं को भूल न जाए। इसलिए उन्होंने 'होरी धूम मच्यो री' नाटक में होली के पारम्परिक रूप का चित्रण किया है। साथ में हमारे भगवान श्री कृष्ण और राधा के प्रेम का वर्णन भी किया गया है। आज भी होली के दिन सबसे ज्यादा धूम वृन्दावन में होती है। सर्वेश्वर के 'होरी धूम मच्यो री' नाटक में राधा उदास बैठी है। उसकी सखी कहती है, "तुम इस तरह सुस्त क्यों बैठी हुई हो। आज तो ब्रज की गली-गली में एक-एक लता में एक-एक - नवेली गोपिका में, एक-एक वन, में बाग में बंसत की मस्ती मादकता छा गई है।" यहाँ पर बसंत के आगमन का भी चित्रण किया गया है कि बसंत आने से कैसे वातावरण में मादकता छा जाती है। सब औरतें अपने-अपने पतियों के साथ होली खेलती है। इस नाटक में राधा भी कृष्ण के साथ होली खेलना चाहती है उसके बिना वह उदास बैठी है और अपनी सखी से कहती है, "हे ललिता सखी! मुझे होली खेलने में लाज आती है। किसके साथ होली खेलूँ मेरे प्रिय कृष्ण तो आज दिखाई नहीं दे रहे हैं तुम मुझसे उनके साथ होली खेलने को कह रही हो, जिन्होंने मेरी आत्मा की परछाई तक नहीं देखी है जाओ तुम कृष्ण को बुला लाओं तब मैं होली खेलूंगी।" यहाँ पर लेखक ने यही दर्शाया है कि होली के त्यौहार पर राधा कृष्ण के बिना होली नहीं खेलती है। अपने प्रिय के सिवा भारतीय नारी किसी और के साथ होली नहीं खेल सकती। जब श्री कृष्ण आते हैं तभी "राधा कृष्ण होली खेलने लगते हैं कृष्ण आगे बढ़कर रंग डालते हैं फिर राधा डालती है और होली की गति तेज हो जाती है सभी उसमें शामिल हो जाते है।"

सर्वेश्वर ने आने वाली पीढ़ी को हमारे होली पर्व के बारे में बताया है कि होली में रंगों का क्या महत्त्व है। ये रंग हमारे जीवन में नई खुशियाँ लेकर आते हैं एक दूसरे से प्रेम भाव बढ़ाते हैं। सर्वेश्वर के नाटक 'रक्षाबंधन' में भाई बहिन के पवित्र प्रेम को उजागर किया गया है। भाई के लिए बहिन कहती है, "जिसके होने मात्र से ही सारी दुनिया बसी हुई लगती है जिससे कुछ न पाकर भी मैं भरी पूरी हूँ जिसके अस्तित्व का आभास मात्र शक्ति का संचार करता है।

इस नाटक में एक बहन कहती है कि हमेशा मेरा भाई मेरी रक्षा के लिए तैयार रहता है। एक बहन के बिना भाई का औचित्य नहीं है और एक भाई के बिना बहन का नहीं। एक दूसरे के बिना दोनों का रिश्ता अधूरा है। 'रक्षाबंधन' के दिन एक बहन को अपने भाई की निकटता महसूस होती है। यथा- "यह

कौन है जो मेरे पास है, मेरे साथ है, लेकिन मैं जिसे देख नहीं पाती और न जिसके पैरों की आहट ही सुन पाती हूँ। क्या मेरे भाई ने आज राखी के दिन मेरी पुकार सुनकर अदेखे देवदूत भेज दिये है।"

'रक्षाबंधन' के दिन बहन अपने मन की खुशी का वर्णन कर रही है उसका भाई चाहे कितनी ही दूर क्यों न रहे पर उसको लगता है कि वह यहीं कहीं है। सर्वेश्वर ने अपने नाटकों के माध्यम से हमारे भारत की संस्कृति, परम्परा, प्यार की भावना और भाई बहन के प्यार का सच्चा स्वरूप प्रकट किया है।

बालकों के विकास से सम्बन्धित चेतना

सर्वेश्वर ने बच्चों के विकास के लिए बाल साहित्य की रचना की है। उनके ये नाटक यथार्थ पर आधारित है। इनसे बच्चों को एक सच्ची शिक्षा मिलती है। उनके नाटक 'हाथी की पों' में लेखक कहता है "जिस चीज को खोजो पूरी लगन से खोजो। मेहनत से जो मिलता है, वही 'हाथी की पों' है वही दुनिया में सबसे कीमती, सबसे सुन्दर, सबसे बड़ी, उसे जिस रंग में चाहो उस रंग में खोज लो।"

इस नाटक में लेखक ने कहा है कि, जिस चीज को तुम्हें खोजना है या पाना है उसके प्रति तुम्हें लगन करनी होगी, तभी वो वस्तु मिलेगी और सच्ची मेहनत और लगन करोगे तो दुनिया में ऐसा कुछ नहीं है जिसे तुम प्राप्त नहीं कर सकते। इस नाटक के माध्यम से बच्चों को कर्मशील बनाने के लिए प्रेरित किया गया है ताकि वे अपनी जिन्दगी में आगे बढ़ सकें।

सर्वेश्वर ने अपने नाटक 'लाख की नाक' में समाज के भ्रष्ट लोगों की भ्रष्ट व्यवस्था पर व्यंग्य किया है। उन्होंने बच्चों को समझाने का प्रयास किया है कि नाक ही व्यक्ति की ईज्जत होती है अगर वह एक बार कट जाए तो वापिस नहीं जुड़ती।

इस नाटक के माध्यम से सर्वेश्वर बच्चों को इज्जत भरी जिन्दगी जीने की प्रेरणा देते हैं। वे इस नाटक के मंत्री का उदाहरण देते हैं कि मंत्री ने घूस ली थी तब उसका नाक कट गया। इसलिए बूरे कार्यों का अन्त बुरा ही होता है जब मंत्री गरीबों से पैसे माँगता है तब कहता है, "सब मेरे पास आते ही गरीब हो जाते हैं सब मुफ्तखोरे कहीं के, चाहते हैं मुफ्त में काम हो जाए। लोमड़ लाओ देखें इसकी तलवार।" सर्वेश्वर कहते है कि ये लोग हमारे समाज को खा रहे हैं क्योंकि हम खुद इन्हें खिला रहे हैं हमें ये खिलाने की प्रवृत्ति छोड़नी होगी। सर्वेश्वर को हमारे समाज के व्यक्ति में ईमानदारी और स्वाभिमान दिखाई देते हैं। सर्वेश्वर को पता है कि हमारे देश के कर्णधार ये बच्चे ही हैं इसलिए उन्होंने उन्हें जागृत करने की कोशिश की है।

मूल्य चेतना

सर्वेश्वर ने अपने नाटकों के माध्यम से बताया है कि, आज समाज में व्यक्ति अपने पुराने मूल्यों को खो रहा है। आज के व्यक्ति को अपनी चेतना और सोच पर इतना भरोसा है कि, वह अपने से बड़ों की बात सुनने को तैयार नहीं है। सर्वेश्वर के नाटक 'यहाँ हम एक हैं' में किशोर अपने मित्र कुसुम से कहता है, "माता-पिता के पद चिह्नों पर अगर बच्चे चलते होते तो दुनिया की प्रगति ही न हुई होती, सभ्यता का विकास ही नहीं होता। लोग बन्दरों की तरह पेड़ों पर ही रहते।" इस नाटक में किशोर पुरानी पीढ़ी पर विश्वास नहीं करना चाहता। उसका कहना है कि हम अगर बार-बार वही कुछ दोहराते रहे तो नयापन कैसे आयेगा, नया विकास कैसे होगा। अगर मनुष्य आज पुरानी बातों पर चलता तो इतनी प्रगति ही नहीं होती। मनुष्य पेड़ों पर ही रहता। आज के व्यक्ति की चेतना नई और अलग है। इस नाटक में कुसुम किशोर से टोपी लगाने के लिए कहती है तब वह कहता है, "तुम महिलाओं की इस प्रवृत्ति ने समाज की प्रगति को रोक रखा है। रूढ़ियों से अभी भी हम बंधें हुए है। तेजी से आगे बढ़ नहीं पाते। सारे संस्कार रीति-रिवाज रस्म पुराने है। उन्हीं को हम पीटे जा रहे है नये मूल्यों और

VOL- IX | ISSUE- V | MAY | 2022 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.331 | ISSN 2349-638x

नई आवश्यकताओं के अनुरूप कहीं कोई परिवर्तन नहीं हो रहा है।"

यहाँ पर किशोर ने कहा है कि, इन्हीं पुरानी रूढ़ियों के कारण आज भी हम उतना आगे नहीं बढ़ सके हैं जितना बढ़ना चाहिए। मैं ये नहीं कहता कि, पुरानी सारी बातें गलत है लेकिन कुछ बातें ऐसी है जो हमें छोड़नी होगी। इस नाटक में 'टोपी' के माध्यम से लेखक कहना चाहते है कि पुराने जमाने में 'टोपी' लगाना लोग इज्जत समझते होंगे लेकिन आज की पीढ़ी की सोच यानि मूल्य चेतना बदल चुकी है। आज टोपी वाले को घृणा की दृष्टि से भी देखते हैं चाहे वह कितना ही ईमानदार हो, पर उसे भ्रष्टाचारी और झूठा समझा जाता है। इसलिए आज व्यक्ति की मूल्य चेतना बदल चुकी है। लेखक कहते हैं कि, समन्वय का मार्ग अपनाकर ही परिवर्तन होगा और वह परिवर्तन बहुत मजबूत होगा।

संदर्भ

१. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ग्रन्थावली - ३, 'बकरी', पृ.सं. ३६.
२. वही, पृ.सं. ४४
३. वही, 'अब गरीबी हटाओ', पृ.सं. १२४.
४. वही, पृ.सं. १२४.
५. वही, 'चाँदी का वर्क', पृ.सं. १६६.
६. वही, 'लड़ाई', पृ.सं. ६०.
७. वही, पृ.सं. ६०.
८. वही, पृ.सं. ५६.
९. वही, 'रूपमति-बाज बहादुर', पृ.सं. १६३.
१०. वही, 'बकरी', पृ.सं. ३७.
११. वही, पृ.सं. ४५.
१२. वही, 'होरी धूम मच्यो री', पृ.सं. १५४.
१३. वही, पृ.सं. १५४.
१४. वही, 'रक्षाबंधन', पृ.सं. १७७.
१५. वही, 'लाख की नाक', पृ.सं. २६४.
१६. वही, 'यहाँ हम एक हैं', पृ.सं. २१०.